तो-तो क्लास। (एक जीवंत कक्षा)

भोला चौधरी (प्रधानाध्यापक)

प्राथमिक विद्यालय चांदपुर

वि क्षेत्र रामपुर कारखाना,जनपद-देवरिया, (उ.प्र.)

बचपन मानव जीवन का सबसे सुन्दर समय होता है।बचपन मतलब,खेल-खिलौने,खुशी,खोज,जिज्ञासा,प्यार-दुलार से भरा जीवन।हर कोई बचपन जीना चाहता है और बचपन की यादों को जीवन पर भर संजोकर रखता है। बचपन में नामुमकिन की कोई गुंजाइश नहीं होती है।बचपन नादान होता है। बचपन असीमित संभावनाओं की चादर में लिपटा एक खूबसूरत समय होता है। बचपन किसी से कोई भेदभाव नहीं करता। बचपन निश्छल होता है।बचपन अक्सर माँ, खेल-खिलौने और चॉकलेट आदि के इर्द गिर्द घूमता रहता है।

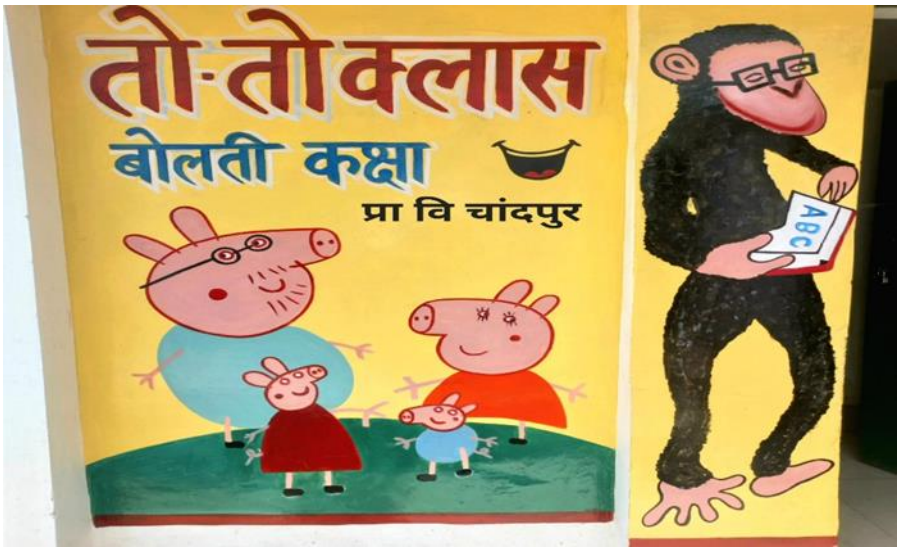

हम सभी में से, सबने बचपन जिया है।बच्चों को माँ के बाद अगर कोई सबसे प्यारा होता है, तो वो,खिलौने ही होते हैं। खिलौनों में बच्चों की जान बसती है।

मैंने अपने कार्यरत प्राथमिक विद्यालय चांदपुर,विकास क्षेत्र-रामपुर कारखाना,जनपद-देवरिया उत्तर प्रदेश में बच्चों और खिलौनों के बीच के आकर्षण को ध्यान में रखकर तो-तो क्लास स्थापित किया है।तो-तो क्लास को खूब सजाया गया है।इसमें रंग-बिरंगे जंगल की थीम वाले परदे खिड़कियों पर लटकाए गए हैं।कमरे के प्रवेश द्वार पर पेपा-पिग फैमिली का चित्र, चश्मा पहनकर किताब पढ़ता चिम्पांजी बच्चों को अपनी तरफ खींचते हैं।

बात यहीं खत्म नहीं होती है।बच्चों के बीच खिलौने ना हो,ऐसा कैसे हो सकता है ? तो-तो क्लास में बच्चों के पसंदीदा खिलौने रखे गए हैं।कुछ खिलौने तो ऐसे हैं, जिनसे बच्चे बात भी कर सकते हैं।जी हाँ,ऐसे इंटरैक्टिव खिलौने,जो बच्चों की तोतली आवाज को दोहराते हैं।

वाकई बच्चों को मज़ा आ जाता है जब वो अपनी बात को दोहराने वाले खिलौनों से बात करते हैं। ये एक शानदार प्रयोग है।बच्चों के मन में बहुत सारी बाते हैं जिनको वो खिलौने से पूछना चाहते हैं।गुनगुन बिलार(बिल्ली)से उसका नाम पूछती है तो

पलक, कैक्टस से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछती है।कार्तिक कैक्टस को ए,बी,सी,डी..... सुनाता है।दिव्या टॉकिंग टॉम से अपना नाम पूछती है। दिव्यांशु टॉकिंग कैक्टस का

घर पूछता है।बच्चों के सवाल सुनकर खिलौने के सिर चकरा जाते होंगे।फिर सारे बच्चे टॉकिंग कैक्टस के साथ गीत पर झूमते हैं।ये पूरा वाकया काफी जीवंत लगता है।कुछ बच्चे क्रोकोडायल के दांत गिनते हैं,तो कुछ साफ्ट टॉयज से खेलते हैं।कोई हाथी को अपने सिर पर बैठाता है तो कोई घोड़े को।एक बात खास है कि टाईगर (बाघ) की पूंछ सभी बच्चे खींचना चाहते हैं।

बच्चों के मन का कोई जवाब नहीं। उनको यह क्लास अच्छी लगने लगी है।स्कूल में बच्चों का मन लगने लगा है।अब उनके चेहरे पर कोई तनाव नहीं दिखता।जो स्कूल उनको भयानक लगता था।स्कूल को लेकर एक अनचाहा सा डर मन में बैठा रहता था।स्कूल नाम ही मन को बोझिल बना देता था। बच्चों के मन का वो डर अब कहीं खो सा गया है।बच्चों में एक वसंती ऊर्जा भर गई है। ये सब कुछ तो-तो कक्षा की देन है। तो-तो कक्षा में बच्चे बहुत खुश हैं।इस खुशी में तब चार चाँद लग जाता है जब कक्षा में लगा स्मार्ट टीवी अपना काम शुरू करता है।

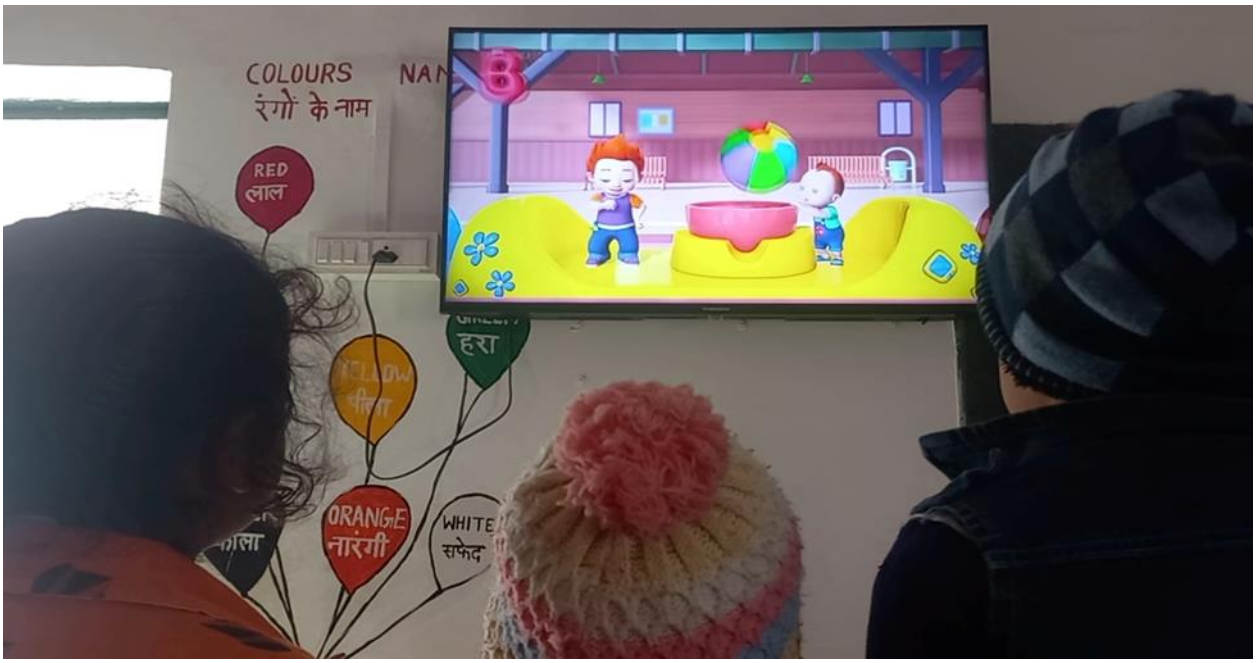

स्मार्ट टीवी स्टार्ट होते ही एनिमेटेड लर्निंग वीडिओज़ और कार्टूनों में बच्चे खो जाते हैं। इस दौरान विद्यालय छोटा होने के कारण बगल की क्लास में भी कुछ सुगबुगाहट बढ़ जाती है। कुछ बच्चे तो बाथरूम जाने या पानी पीने के लिए "मे आई गो आउट सर/मैडम ? पूछते नजर आते हैं। ऐसा होने पर घबराने की कोई बात नहीं,उनको तो बस इतना पता करना होता है कि तो-तो क्लास में चल क्या रहा है?

सच में तो-तो क्लास जिज्ञासाओं से भरी होती है। बच्चों के मन में जानने समझने की ललक रहती है।इसका सबसे ज्यादा असर बच्चों की उपस्थिति पर पड़ता है। अब बच्चे

विद्यालय आना चाहते हैं।सोचना चाहते हैं,खिलौनों और परदों को छूना चाहते हैं।कुछ बच्चे तो खिलौनों को घर ले जाने की भी सोचते हैं।बच्चे और खिलौने एक सिक्के के दो पहलू हैं।दोनों एक दूसरे के लिए ही हैं। प्राथमिक विद्यालय चांदपुर की तो-तो कक्षा बच्चों की पसंदीदा कक्षा है।